

## छत्रपति शिवाजी महाराज का वाघ नख

### प्रलिस के लयल:

वाघ नख, [छत्रपति शलवलजी](#), चौथ, सरदेशमुखी, सरंजाम प्रणाली

### मेन्स के लयल:

मराठा साम्राज्य और प्रशासन

[सरोत: इंडयलन एक्सप्रेस](#)

## चरुा में क्युँ?

महाराष्ट्र के सांसुकृतक करय मंत्रालय ने छत्रपति शलवलजी महाराज के असुत्र "वाघ नख" को राज्य में वापस लाने के लयल लंदन के वकलुोरयल और अलबर्ट संग्रहालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हसुताकषर कयल हैं ।

- इस समझौता ज्ञापन के अनुसार, प्राचीन हथयलर को तीन वर्ष की अवधल के लयल ःणालुमक आधार पर महाराष्ट्र सरकार को साँपा जाएगा , उकत अवधल के दौरान इसे राज्य भर के संग्रहालयों में प्रदरशल कयल जाएगा ।

## वाघ नख:

- 'वाघ नख', जसलका शालुदकल अरुथ है 'वाघ का पंजा', एक वशलषलट मध्यकालीन खंजर है जसलका उपयुग भारतीय उपमहादुीप में कयल जाता है ।
  - इस घालक हथयलर में एक दसुताने और एक छड से जुडे चार अथवा पाँच घुमावदार बलेड होते हैं, जसलसुयकुतगलत सुरकुषा अथवा गुप्त तरलके से हमला करने के लयल डजालइन कयल गया था ।
  - इसके नुकीले बलेड काफी तेज थे ।
- छत्रपति शलवलजी दुवलर 'वाघ नख' का उपयुग:
  - कुँकण कुषेुत्र में शलवलजी की मजबूत पकड व अभयलनों को कमजुोर करने के लयल नयुकुत कयल गए बीजापुर के सेनापतल अफजल खान और छत्रपति शलवलजी के बीच मुठभेड हुई थी । अफजल खान ने शांतपूरण सुलह का सुझाव दयल था कतल संभावतल खतरे की आशंका को देखते हुए शलवलजी पूरी तैयारी के साथ आए थे ।
    - उन्होंने 'वाघ नख' को छुपाए रखा था और अपनी पोशाक के नीचे चेनमेल (छुटे धालु के छलले से बना कवच) पहन रखा था । आपसी संघरुष में शलवलजी ने अफजल खान पर 'वाघ नख' से हमला कयल जसलके परणलामसुवरुप खान की मृत्यु हो गई, अंततः शलवलजी की जीत हुई ।



//

## छत्रपति शिवाजी महाराज से संबंधित प्रमुख बदि:

### ■ जन्म:

- उनका जन्म 19 फरवरी, 1630 को महाराष्ट्र के पुणे ज़िले के शविनेरी किले में हुआ था, वह बीजापुर सल्तनत के तहत पुणे और सुपे की जागीरदारी रखने वाले मराठा सेनापति शाहजी भोंसले तथा एक धार्मिक महिला जीजाबाई के पुत्र थे, जिनका शिवाजी के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा।

## महत्त्वपूर्ण युद्ध:

प्रतापगढ़ का युद्ध, 1659	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज और आदिलशाही सेनापति अफज़ल खान की सेनाओं के बीच महाराष्ट्र के सतारा शहर के पास प्रतापगढ़ के किले में लड़ा गया था।</li></ul>
पवन खिंड का युद्ध, 1660	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध मराठा सरदार बाजी प्रभु देशपांडे और आदिलशाही के सिद्दी मसूद के बीच महाराष्ट्र के कोल्हापुर शहर के पास (विशालगढ़ किले के आसपास) एक पहाड़ी दर्रे पर लड़ा गया।</li></ul>
सूरत का युद्ध, 1664	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध गुजरात के सूरत शहर के पास छत्रपति शिवाजी महाराज और मुगल कप्तान इनायत खान के बीच लड़ा गया।</li></ul>
पुरंदर का युद्ध, 1665	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया।</li></ul>
सिंहगढ़ का युद्ध, 1670	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध महाराष्ट्र के पुणे शहर के पास सिंहगढ़ के किले पर मराठा शासक शिवाजी महाराज के सेनापति तानाजी मालुसरे और जय सिंह प्रथम के अधीन गढ़वाले उदयभान राठौड़, जो मुगल सेना प्रमुख थे, के बीच लड़ा गया।</li></ul>
कल्याण का युद्ध, 1682-83	<ul style="list-style-type: none"><li>इस युद्ध में मुगल साम्राज्य के बहादुर खान ने मराठा सेना को हराकर कल्याण पर अधिकार कर लिया।</li></ul>
संगमनेर की युद्ध, 1679	<ul style="list-style-type: none"><li>यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया। यह आखिरी युद्ध थी जिसमें मराठा राजा शिवाजी लड़े थे।</li></ul>

### ■ उपाधियाँ:

- उनके द्वारा छत्रपति, शाककार्ता, क्षत्रिय कुलवंत तथा हैंदव धर्मोधारक की उपाधियाँ धारण की गईं।

### ■ शिवाजी के अधीन प्रशासन:

#### ○ केंद्रीय प्रशासन:

- उन्होंने आठ मंत्रियों की एक परिषद (अष्टप्रधान) के साथ एक केंद्रीकृत प्रशासन की स्थापना की, जो प्रत्यक्ष रूप से उनके प्रती ज़िम्मेदार थे और राज्य के विभिन्न मामलों पर उन्हें सलाह देते थे।

- पेशवा, जिसे मुख्य प्रधान के रूप में भी जाना जाता है, मूल रूप से राजा शिवाजी की सलाहकार परिषद का नेतृत्व करता था।
- **प्रांतीय प्रशासन:**
  - शिवाजी ने अपने राज्य को **चार प्रांतों** में विभाजित किया। प्रत्येक प्रांत को ज़िलों और ग्राम में विभाजित किया गया था। प्रशासन की मूल इकाई ग्राम थी तथा यह ग्राम पंचायत की मदद से देशपांडे द्वारा शासित था।
  - केंद्र की भांति, आठ मंत्रियों की एक समिति अथवा परिषद होती थी। जिसमें सर-ए- 'कारकून' अथवा 'प्रांतपति' (प्रांत का प्रमुख) होता था।
- **राजस्व प्रशासन:**
  - शिवाजी ने **जागीरदारी प्रणाली** को समाप्त कर दिया और इसे **रैयतवारी प्रणाली** में बदल दिया तथा वंशानुगत राजस्व अधिकारियों की स्थिति में परिवर्तन किया, जिन्हें **देशमुख, देशपांडे, पाटलि एवं कुलकर्णी** के नाम से जाना जाता था।
  - शिवाजी उन मीरासदारों (Mirasdar) का कड़ाई से पर्यवेक्षण करते थे जिनके पास भूमिपर वंशानुगत अधिकार था।
  - राजस्व प्रणाली **मलकि अंबर की काठी प्रणाली (Kathi System)** से प्रेरित थी, जिसमें भूमि के प्रत्येक टुकड़े को **कोरॉड अथवा काठी** द्वारा मापा जाता था।
  - **चौथ और सरदेशमुखी** आय के अन्य स्रोत थे।
    - चौथ कुल राजस्व का 1/4 भाग था जिसे गैर-मराठा कर्षेत्तों से मराठा आक्रमण से बचने के बदले वसूला जाता था।
    - यह आय का 10 प्रतिशत होता था जो अतिरिक्त कर के रूप में था।
- **सैन्य प्रशासन:**
  - शिवाजी ने एक अनुशासित और कुशल सेना का गठन किया। **सामान्य सैनिकों को नकद में भुगतान** किया जाता था, लेकिन प्रमुख एवं सैन्य कमांडर को जागीर अनुदान (**सरंजाम**) के माध्यम से भुगतान किया जाता था।
    - उनकी सेना में **इन्फैंट्री सेना (मावली पैदल सैनिक), घुड़सवार सेना (घुड़सवार और उपकरण संचालक)** तथा एक नौसेना शामिल थी।
  - मुख्य भूमिकाओं में सेना के प्रभारी **सर-ए-नौबत (सेनापति), कलियों की देख-रेख करने वाले कल्लेदार, पैदल सेना इकाइयों का नेतृत्व करने वाले नायक, पाँच नायकों के समूहों का नेतृत्व करने वाले हवलदार तथा पाँच नायकों की देखरेख करने वाले जुमलादार** शामिल थे।
- **मृत्यु:**
  - शिवाजी का निधन वर्ष **1680 में रायगढ़** में हुआ तथा उनका अंतिम संस्कार **रायगढ़ कल्ले** में किया गया। उनके साहस, युद्ध रणनीति और प्रशासनिक कौशल की सम्मति एवं सम्मान में प्रत्येक वर्ष **19 फरवरी** को शिवाजी महाराज जयंती मनाई जाती है।